ईश्वर के शब्द का पालन न करना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

लूका 12:47b: “…और जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत जिम्मेदारी सौंपी गई है, उससे और भी
अधिक माँगा जाएगा।”

सुसमाचार एक ऋण है
हर दिन जब हम ईश्वर के शब्द को सुनते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि हम उसके सामने अपने ऊपर ऋण बढ़ा रहे हैं। जैसा कि बाइबल कहती है, “ईश्वर का वचन जीवित है और शक्तिशाली है” (इब्रानियों 4:12)। इसका मतलब है कि जब भी ईश्वर का वचन हमारे भीतर प्रवेश करता है, तो वह जीवन के फल उत्पन्न करने की उम्मीद रखता है—हमारे भीतर परिवर्तन लाना और दूसरों के जीवन में भी बदलाव करना।

अगर हम आज ईश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर कोई कार्य नहीं करते, केवल सुनते या पढ़ते हैं, जैसे कोई रोमांचक खबर, फिर दूसरी चीजों में व्यस्त हो जाते हैं—तो कल फिर वही पैटर्न दोहराते हैं—तो महीनों या सालों बाद भी हमारे भीतर कोई बदलाव नहीं होगा। हम बस विषय पढ़ते हैं, गुजर जाते हैं, और सोचते हैं कि यह सामान्य है, और शायद भगवान भी इसे वैसे ही मानते हैं।

लेकिन भगवान हर शब्द को गिनते हैं जो हमारे कानों में जाता है। क्योंकि वह कहते हैं, “मेरा वचन व्यर्थ नहीं जाएगा” (यशायाह

ईश्वर के शब्द का पालन न करना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

55:11)। हर शब्द का जवाब चाहिए, और वह जवाब उस दिन हमसे लिया जाएगा जब हम न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होंगे।

जिसे बहुत दिया गया, उससे और मांगा जाएगा
बाइबल कहती है: “जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत जिम्मेदारी सौंपी गई है, उससे और भी अधिक माँगा जाएगा।”

भगवान चाहते हैं कि आप जो सुनते हैं, उसे दूसरों के लिए भी उपयोग करें, विशेष रूप से उनके लिए जो आपको बताए गए उपहारों के माध्यम से सुन सकते हैं। अगर हम इसे रोकते हैं, तो यह उसी तरह है जैसे किसी भूखे को भोजन देना बंद कर देना।

कहीं कोई महिला मूर्ति पूजा में लगी है और उसे सच्चाई नहीं पता; अगर उसे बताया जाए तो वह प्रभु की शरण में आ सकती थी।

कोई युवक सोचता है कि केवल अपनी धार्मिक प्रथा अपनाना उसे स्वर्ग ले जाएगा, जबकि वास्तविक रास्ता केवल यीशु है।

कोई व्यक्ति जीवन में हतोत्साहित है और स्वयं को नुकसान पहुँचाना चाहता है, लेकिन यदि कोई उसे यीशु का संदेश देता, तो वह जीवन पा सकता था।

ईश्वर के शब्द का पालन न करना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

हम में से कई लोग, जो पूरी तरह संतुष्ट हैं, दूसरों को यह सुसमाचार नहीं सुनाते।

सचाई का सामना
जब वह दिन आएगा, हमसे पूछा जाएगा:

“अच्छे और विश्वासी सेवक; तुम थोड़े पर विश्वासी रहे, इसलिए
मैं तुम्हें बहुत पर रखूँगा। प्रभु की खुशी में प्रवेश
करो।” (मत्ती 25:21)

और कहा जाएगा:

“बुरा और आलसी सेवक! तुम जानते थे कि मुझे फसल काटनी है, पर तुमने बोया नहीं। इसलिए वह जो तुम्हारे पास है उससे भी छीना जाएगा और उसे उस पर दिया जाएगा जिसे दस प्रतिभा मिली है। क्योंकि जो किसी के पास है, उसे और अधिक दिया जाएगा; और
जिसका कुछ नहीं है, उससे जो कुछ है वह भी छीना जाएगा। और उस सेवक को बाहर अंधकार में फेंक दिया जाएगा, वहाँ विलाप और दांत पीसने होंगे।” (मत्ती 25:26-30)

ईश्वर के शब्द का पालन न करना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

हमें ईश्वर के शब्द से अपरिचित नहीं होना चाहिए। हर दिन जब हम इसे सुनें, हमें उस पर कार्य करना चाहिए। क्योंकि एक दिन प्रभु देखेंगे, और यदि कोई फल नहीं दिखेगा, तो परिणाम भयावह होगा।

बाइबल हमें याद दिलाती है:
“क्योंकि वह परमेश्वर है जो तुम्हारे भीतर काम करता है, तुम्हारी इच्छा और कर्म को उसके भले उद्देश्य के अनुसार
पूरा करता है।” (फिलिप्पियों 2:13)

हम हर दिन अपनी आत्मा का परीक्षण करें और एक कदम आगे बढ़ाएं।

मारानाथा!
भगवान आपका भला करे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp